

प्र० 18
पाठ

ठण-माध्यमर छुमिका
गण-माध्यमर भूमिका

सूरेश : नमस्कार महताब बाबू ।
छिरकु आसनू । बसनू ।

महताब : नमस्कार । क्षमा करिबे,
ठिके डेरि द्वाइशला ।

सूरेश : आपण क'ण मोाते क्षमा
मागुच्छन्तु ? आप
अपिश्वालात आपणज्ञ पाइँ
गाढ़ि पठेइथा'न्तु ।

महताब : एहार दिरकार नाह्ति ।
मोर घर एइ पाखरे ।
मूँ खाइकरि ठिके
शोइपडिलि । उठिकरि
देखिलाबेलकु ४ठा
वानिबाकु थिला । पाङ्गे
पांगे प्रसूत द्वाइ दिण
मिनिट्से मूँ एठारे
पहुँचिलि ।

सूरेश : हुउ, बसनू । आपणज्ञ
मोर ढाकिबार उद्देश्य
जाणिच्छन्तु ना ?

महताब : आरे मूँ केमिति जाणिलि?

जन-संचार माध्यम की भूमिका

सुरेश : नमस्कार महताब बाबू । अंदर
आइए, बैठिए ।

महताब : नमस्कार । क्षमा कीजिए । थोड़ी सी
देरी हो गई ।

सुरेश : आप मुझ से क्यों क्षमा माँगते हैं?
हमारे अफिसवाले तो आप केलिए
कार भेजनेवाले थे ।

महताब : उस की जरूरत नहीं । मेरा घर
पास में तो है । मैं खाना खाकर ज़रा
सो गया था । उठा और देखा तो
चार बजनेवाला था । तुरंत तैयार
होकर चलते चलते दस मिनिट में
यहाँ पहुँचा ।

सुरेश : अच्छा, बैठिए । आप जानते हैं कि मैं
ने आपको किस उद्देश्य से बुलाया?

महताब : अरे मुझे कैसे मालूम ? आपने
मुझे बुलाया, इसीलिए तो मैं आया ।

सुरेश : क्या आप ने हमारी चिड़ी नहीं पढ़ी?
बड़े बड़े लोगों का साक्षात्कार
(इन्टर्व्यू) लेना पत्रकारों का काम

आपश उक्तिले बोलिए
मूँ अद्वितीय।

सुरेश : क'ण आपश आमर चिठि
पढ़ि नाहान्ति। बड़बड़
लोकज्ञर याक्षातकार
नेबा यामुदिक मानज्ञर
मूष्य काम। आदि मूँ
आपशज्ञ याक्षातकार नेबि
बोलि उद्विद्वि।

महताब : आरे, मूँ त राजनीतिक
नेता नूहेँ, कि कवि,
कलाकार मध्य नूहेँ। मूँ
तुमपरि उशें यामुदिक।
देखाशुणा कथाकू परिवेषण
करिबा आमर काम। मोरुँ
काहिंकि याक्षातकार
नेबाकू उद्वृद्वि?

सुरेश : यमुद पत्र, दूरदर्शन, ओ
आकाशवाणी परि गण-
माध्यमर याधानता
विषयूरे आपशज्ञ मतामत
क'ण ?

महताब : गण-माध्यम गूढ़िकर
याधानता निहाति आवश्यक।
सृजन्ता विना निरपेक्ष
मतामत प्रकाश करिबा
बद्दुड़ि कष्टकर।

सुरेश : यरकारी नियन्त्रण रहिले

है। आज मैंने आपका साक्षात्कार
लेने की सोची है।

महताब : अरे, न तो मैं राजनीतिक नेता हूँ न
कवि या कलाकार। मैं भी तुम्हारे
जैसे एक पत्रकार हूँ। देखी सुनी
बातों को प्रसारित करना हमारा
काम है। मुझ से क्यों साक्षात्कार
लेना चाहते हो?

सुरेश : समाचार-पत्र, दूरदर्शन और
आकाशवाणी जैसे जन-संचार
माध्यमों की स्वतंत्रता के बारे में
आपकी क्या राय है?

महताब : (सब) जन-संचार माध्यमों की
स्वतंत्रता नितांत आवश्यक है। बिना
स्वतंत्रता के निष्पक्ष राय व्यक्त
करना बहुत कठिन है।

सुरेश : सरकारी नियंत्रण रहने में क्या
खराबी है?

महताब : क्या नियंत्रित जन-संचार माध्यम
निष्पक्ष राय व्यक्त कर सकेंगे?
नियंत्रण होने पर ऊपर से हस्तक्षेप
और भय, (ये) दोनों अवश्य रहेंगे।

ଖରାପ କ'ଣ ?

ମହୁଡ଼ାବ : ନିଧୂନ୍ଦୀତ ଗଣ-ମାଧ୍ୟମ କ'ଣ
ନିରପେକ୍ଷ ମତାମତ ପ୍ରକାଶ
କରିପାରିବ? ନିଧୂନ୍ଦୀ
ରହିଲେ ଉପରୁ ଦୃଷ୍ଟିକ୍ଷେପ ଓ
ଉଦ୍‌ ଏ ଉଭୟ ନିଶ୍ଚିଯୁ
ରହିବ ।

ସୁରେଣ : ଆଛା, ଆପଣ କ'ଣ ସ୍ଵାକାର
କରିବେ କି ଗଣ-ମାଧ୍ୟମ
ଦେଲେ ଦେଲେ ବିଭ୍ରାନ୍ତିକର
ଓ ପକ୍ଷପାତପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ବାଦ
ପରିବେଶଣ କରୁଛି । ଏହାର
କାରଣ କ'ଣ?

ମହୁଡ଼ାବ : ଏହାକୁ ଏକପ୍ରକାର 'କାମଳ
ସାମ୍ବାଦିକତା' କହିପାରିବା
କେତେକ ସାମ୍ବାଦିକ ସ୍ଥାର୍ଥ ଓ
ନାମକମେଇବା ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ
ଏତିଲି ସମ୍ବାଦ ପରିବେଶଣ
କରୁଛନ୍ତି ।

ସୁରେଣ : ବାସୁଦ୍ଵିକ, ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟମୂଳକ
ସମ୍ବାଦ ପରିବେଶଣ କରିବା
ନିନ୍ଦା ଯୁ ଥିଲେ । ଆଛା,
ଆଜି ଆମ ସମାଜର
ଅଧୋଧିକାର ହେଉଛି । ଗଣ-
ମାଧ୍ୟମ କ'ଣ ତାକୁ ସୁଧାରି
ପାରିବ ନାହିଁ ?

ମହୁଡ଼ାବ : ନିଶ୍ଚିଯୁ ନିଶ୍ଚିଯୁ । ସମାଜକୁ

ସୁରେଶ : ଅଚ୍ଛା, କ୍ୟା ଆପ ସ୍ଵୀକାର କରତେ ହୁଁ
କି ଜନ-ସଂଚାର ମାଧ୍ୟମ କବୀ-କବୀ
ଭାର୍ତ୍ତି ପୂର୍ଣ୍ଣ ତଥା ପକ୍ଷପାତ ଯୁକ୍ତ
ସମାଚାର ହି ଦେ ରହେ ହୁଁ । ଇସକୀ କ୍ୟା
କାରଣ ହୁଁ?

ମହତାବ : ଇସେ ଏକ ପ୍ରକାର କୀ 'ପାଂଡୁର (ପୀଲି)
ପତ୍ରକାରିତା' କହ ସକତେ ହୁଁ । କର୍ତ୍ତ
ପତ୍ରକାର ସାର୍ଥ ତଥା ନାମ କମାନେ କୀ
ଇଚ୍ଛା ସେ ପ୍ରେରିତ ହୋକର ଇସୀ ତରହ କେ
ସୋଚ ସମାଚାର ପ୍ରସାରିତ କର ରହେ ହୁଁ ।

ସୁରେଶ : ବାସ୍ତବ ମେଂ, ଉଦ୍ୟୋଗ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସମାଚାର
ପ୍ରସାରିତ କରନା ନିଂଦନୀୟ ହୁଁ । ଅଚ୍ଛା,
ଆଜ ହମାରେ ସମାଜ କା ଅଧୋପତନ ହୋ
ରହା ହୁଁ । କ୍ୟା ଜନ-ସଂଚାର ମାଧ୍ୟମ
ତୁ କା ସୁଧାର ନହିଁ କର ସକତେ?

ମହତାବ : ଜରୁର, ଜରୁର । ଜନ-ସଂଚାର ମାଧ୍ୟମ
ସମାଜ କୋ ଜରୁର ବଦଳ ସକେଗେ ।
ଇସିଲିଏ ପତ୍ରକାରୋ କା ମହତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ
ଦାୟିତ୍ବ ରହା ହୁଁ । ସମାଜ ମେଂ ହୋ ରହେ
ଅନ୍ୟାନ୍ୟ, ଅତ୍ୟାଚାର, କୁସଂସ୍କାର ଔର
ଶୋଷଣ କେ ଵିରୋଧ ମେଂ ପତ୍ରକାରୋ କୀ
କଲମ କୋ ହର ସମୟ (ସଚେତ) ଜାଗୃତ
ରଖନା ପଡ଼େଗା । ଇସିଲିଏ କହା ଜାତା
ହୁଁ କି ତଳବାର କି ଅପେକ୍ଷା ଲେଖନୀ କା
ବଳ ଅଧିକ ହେତୁ ହେତୁ ହେତୁ । (ଅସି କୀ
ଅପେକ୍ଷା ମସି ବଲବାନ)

गण-माध्यम निश्चय
 बदलेइ पारिब । एथिपाइँ
 सामुदिक मानक्षर
 गूरुदायीतु रहिछि ।
 समाजरे घटुथिबा अन्याय,
 अठाचार, कुष्टंस्थार ३
 शोषण दिरुद्वरे
 सामुदिकर कलम घर्षदा
 जाग्रुत रक्षिबाकु द्वेब ।
 एथिपाइँ कुद्वायाए कि,
 अणी ०। रु मध्यार बल
 देणी ।

युरेण : कला, साहित्य ओ संस्कृति
 विकाश पाइँ गण-माध्यमर
 भूमिका बाबदरे पढे
 कुहन्नुना?

महाताव : देढार ओ दूरदर्शन
 माध्यमरे संगाठ, नृत्य,
 नाटक, चलचित्र, कला,
 साहित्य ओ लोक संस्कृति
 आदिर बहुल प्रशारण
 हेउछि । समाजपत्र गूढ़िकर
 'साधुद्विक विशेषाङ्क' मध्ये
 अहि । एथिरे कला,
 साहित्य, संस्कृति आदि
 विषये बहुल प्रशारण
 लेखा ओ उभाव गर्भक
 प्रबन्ध प्रकाशित हेउछि ।
 एहा पाठुआङ्क पाइँ बहुत

सुरेश : कला, साहित्य और संस्कृति के
 विकास के लिए जन-संचार माध्यम
 की भूमिका के बारे में कुछ कहिए
 ना?

महाताव : आकाशवाणी और दूरदर्शन के
 माध्यम से संगीत, नृत्य, नाटक,
 चलचित्र, कला, साहित्य और लोक
 संस्कृति आदि के बहुत कार्यक्रम
 प्रसारित हो रहे हैं । समाचार पत्रों
 के 'साप्ताहिक विशेषाङ्क' भी हैं । इन
 में कला, साहित्य, संस्कृति आदि के
 विषयों पर मौलिक लेख और
 भावपूर्ण निबंध प्रकाशित हो रहे हैं ।
 ये पढ़े-लिखे लोगों के लिए उपयोगी
 (सिद्ध) हैं । यह सब हमारी कला,
 साहित्य और संस्कृति (के लिए)
 जन-संचार माध्यम का देन है ।

सुरेश : आपका अमूल्य समय में और
 अधिक नहीं लूँगा । यह मेरा अंतिम
 प्रश्न है । आधुनिक जीवन में जन-
 संचार माध्यम की अपरिहार्यता के
 बारे में आप की राय क्या है ?

महाताव : जन-संचार माध्यम ने आज की
 दुनियाँ को छोटासा बना दिया है ।
 क्षण भर में हम दुनियाँ के किसी भी
 प्रांत (भाग) की घटनाएँ जान सकते
 हैं । जन-संचार माध्यम ने आज सारे

ସହାୟକ ହେଉଛି । ଏହି
ସବୁତ ଆମ କଲା, ସାହିତ୍ୟ
ଓ ସଂସ୍କୃତିକୁ ଗଣ-ମାଧ୍ୟମର
ଅବଦାନ ।

ସୁରେଣ୍ଠି : ଆପଣଙ୍କର ମୂଲ୍ୟବାନ ସମୟ
ଆଉ ଅଧିକ ନେବିନାହିଁ ।
ଏଇ ମୋର ଶେଷ ପ୍ରଶ୍ନ ।
ଆଧୁନିକ ଜୀବନରେ ଗଣ-
ମାଧ୍ୟମର ଅପରିହାର୍ଯ୍ୟତା
ସଂପର୍କରେ ଆପଣଙ୍କ ରାଧ୍ୟ
କ'ଣ?

ମହୁତାବ : ଗଣ-ମାଧ୍ୟମ ଆଜିର ବିଶ୍ଵକୁ
ସଙ୍କୁଚିତ କରିଦେଇଛି ।
ମୁହୂର୍ତ୍ତକ ଭିତରେ ପୃଥିବୀର
ଯେ କୌଣସି ପ୍ରାନ୍ତର ଘଟଣା
ଆମେ ଜାଣି ପାରୁଛୁ, ଦେଖି
ପାରୁଛୁ । ଗଣ- ମାଧ୍ୟମ ଆଜି
ଏକତାର ବନ୍ଧନରେ ସମ୍ମଗ୍ର
ବିଶ୍ଵକୁ ବାନ୍ଧି ଦେଇଛି ।

ସୁରେଣ୍ଠି : ଆଜି ସନ୍ଧ୍ୟାରେ ଆପଣଙ୍କ
ସାକ୍ଷାତ କରି ନିଜକୁ ଧନ୍ୟ
ମନେ କରୁଛି । ଆପଣଙ୍କର
ଏ ମହାନୁଭବତା ପାଇଁ
ଅଣେକ ଧନ୍ୟବାଦ ।

ମହୁତାବ : ହୁଉ, ମୁଁ ଯାଉଛି ସୁରେଣ୍ଠି ।
ପୁଣି ଦେଖାହେବ ।

ସୁରେଣ୍ଠି : ନାହିଁ ନାହିଁ, ଆପଣ ଆମ

ବିଶ୍ଵ କୋ ଏକତା କେ ବଂଧନ ମେ ବାଁଘ
ଦିଯା ହୈ ।

ସୁରେଣ୍ଠି : ଆଜ ଶାମ ଆପସେ ମୁଲାକାତ କର
(କେ) ମେ ସମ୍ବେଦନ କରିବାକୁ
ଆପ କି ଇହ ମହାମନସକତା
(ବଡ଼ାପନ) କେ ଲିଏ ବିଶେଷ ଧନ୍ୟବାଦ ।

ମହାତାବ : ଅଚ୍ଛା, ମୈ ଜା ରହା ହୁଁ ସୁରେଣ୍ଠି । ଫିର
ମିଳିବେ ।

ସୁରେଣ୍ଠି : ନହିଁ, ନହିଁ । ହମାରେ ସାଥ ଆପ ଭୋଜନ
କରକେ ହୀ ଜାଏଂଗେ । ମୈ ଅପଣି ଗାଡ଼ି ମେ
ଆପକୋ ଛୋଡ଼ କର ଆଉଁଗା ।

याङ्गरे शाइकरि हौं
यिबे । मूँ मो गाड़िरे
आपशङ्कु हुड़िदेल आयिबि ।

शब्दार्थ

ओड़िआ शब्द	हिंदी अर्थ
घामुदिक	पत्रकार
घाक्षात्कार	साक्षात्कार, भेंट, इन्टर्व्यू
चिठि	खत
देखाशूणा कथा	देखी सुनी बात
परिवेशन करिबा	प्रसारित करना
घम्बाद पछु	समाचार पत्र
जण-माध्यम	जन-संचार माध्यम
क्षमा करिबे	माफ् करना
घुधानठा	स्वतंत्रता
निरपेक्ष	निष्पक्ष
मठामठ	अभिमत, राय
उद्यू	डर
उउद्यू	दोनों
निश्चृंगू	निश्चय
विभ्रान्तिकर	भ्रांतिपूर्ण
पक्षपात	पक्षपात
घम्बाद	समाचार
कामल घामुदिकठा	पांडुर (पीली) पत्रकारिता (स्वार्थपूर्ण पत्रकारिता)
घार्यपर	स्वार्थपूर्ण
उद्देश्यमूलक	उद्देश्य पूर्ण

बासुबिक	वास्तविक
सूधारि पारिबा	सुधार करना
गूरू दायित्र	महत्वपूर्ण दायित्व
शंकुचित	संकोचन
अशी	तलवार
मशी	स्याही
विशेषाङ्क	विशेषांक
ठाबगर्भक	भावपूर्ण
प्रबन्ध	निबंध
अपरिन्द्रार्यपता	अपरिहार्यता
मूल्यवान् समय	मूल्यवान् समय
मूल्यर्भक उत्तरे	क्षण भर में
पेकोण्ठि प्रान्त	हर भाग
बान्धिदेवा	बांधना
अशेष	विशेष

अभ्यास

I. 1) नीचे दिए गए वाक्य दोहराइए।

1. साक्षात्कार नेबा गोटिए मूल्य काम।
2. सामुदिकमानज्ञर साक्षात्कार नेबा गोटाए मूल्य काम।
3. चालि चालि यिबाकु हैब।
4. कि साक्षात्कार नेब ?
5. उठें सामुदिकज्ञाँ कि साक्षात्कार नेब ?
6. पदे कुहन्तु ना ?
7. गण-माध्यमर अवदान बाबदरे पदे कुहन्तुना ?

2)

1. मूँ राजनीतिक नेता नूहेँ कि कवि, कलाकार नूहेँ।

2. किन्तु एथिपाइँट सामूदिकज्जर अनेक गूरुदायिृद्द रहिछ्छ ।
3. महुताब बाहुज्जर ढेरि हेला काहींकि ?
4. शोळकि आसुआसु महुताब बाहुज्जर ढेरि हेला ।
5. गण-माध्यमर स्वाधीनता काहींकि दरकार ?
6. निरपेक्ष मठामठ प्रकाश पाइँ गण-माध्यमर स्वाधीनता दरकार ।
7. कामल सामूदिकता काहाकु कहन्ति ?
8. बिभ्रान्तिकर ओ पक्षपातपूर्ण सम्बाद परिवेषकालु 'कामल सामूदिकता' कहन्ति ।

II. कोष्टक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1. शोळकि _____ चिके ढेरि हेलाइला । (उठिबा)
2. आपश क'श निरपेक्ष मठामठ प्रकाश _____ ? (करिपारिबा)
3. समाजकू गण-माध्यम निश्चय बाटकू _____ । (आणि पारिब)
4. एथिरे भावर्गर्भक आलोचना ओ प्रबन्ध _____ । (प्रकाशित हेबा)
5. आपश, आम साजरे _____ यिवे । (शाळ)

III. कोष्टक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1. सम्बाद परिवेषक सह साक्षात्कार नेबा _____ एक मूल्य काम । (सामूदिक, सामूदिकमानज्जर)
2. नियन्त्रणाधीन गण माध्यम _____ निरपेक्ष मठामठ प्रकाश करिपारिब ? (किए, क'श)
3. अन्याय बिरुद्धरे कविर कलम सर्वदा _____ दरकार । (शोळ रहिबा, ऊग्रत रहिबा)
4. पृथिवीर ये कोशिष्य प्रान्तर घटासा दूरदर्शनरे आमे _____ । (देखुत्तर्नि, देखिपारिबा)
5. आजि आपशकू _____ निजकू धन्य मने करुछि । (साक्षात् करि, नकहि)

IV. कोष्टक में दिए गए हिंदी शब्दों के समानार्थक ओडिआ शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए।

1. योशी बाबू, आजि र _____ पढ़िलेणि ना ? (समाचार पत्र)
2. कुल्दीप् नायूर उणे ख्यातनामा _____। (पत्रकार)
3. आपण आजि एकाळर _____ शूणिलेणि ना ? (समाचार)
4. ये _____ आम घरकु आसन्ति । (कभी-कभी)
5. ताङे घट्ट मोर _____ द्वाइपारिला नाहीं । (मुलाकात)

V. नीचे दिए गए (क) तथा (ख) खंडों के वाक्यांशों का सही मिलान कर वाक्य बनाइए ।

(क)	(ख)
उमे कहिथिल बोलित	आपणांक मतामत क'ण
आजि मुँ आपणाङ्कु	आसुथिवार मुँ देणित्रु
ए संपर्करे	आपणाङ्कु छाडि देल आविरि
ये चालि चालि	मुँ आविलि
मुँ मो गाढिरे	साक्षातकार नेबापाऊँ ढाकित्रु

VI. उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यों को अलग अलग वाक्यों में खंडित किसिए ।

उदाहरण:- केतेक सामुदिक स्वार्थ ओ नाम कमेइवा उद्देश्यरे एउलि सम्बुद्ध परिवेषण करन्ति ।

- 1) केतेक सामुदिक स्वार्थ ओ नाम कमान्ति ।
- 2) येमाने उद्देश्य रणि एउलि सम्बुद्ध परिवेषण करन्ति ।

1. मुँ राजनीतिक नेता नुहेँ कि कवि कलाकार नुहेँ ।
2. नियन्त्रण रहिले उपरकु उयु ओ उपरु हृस्त्रेष्प रहिब ।
3. गण माध्यम बिभ्रान्तिकर ओ पक्षपातपूर्ण सम्बुद्ध परिवेषण करुत्रु ।
4. एथिरे मोलिक लेखा ओ प्रबन्ध प्रकाशित हुइत्रु ।
5. आजि यश्यारे आपणाङ्कु साक्षात करि निजकु धन्य मने करुत्रु ।

पढ़िए और समझिए

ଏହିଦ୍ୱୟର ଦର୍ଶନ ୟୈତିହ୍ୟର ଦର୍ଶନ

ଇତିହାସର ଛ୍ଳାତ୍ରଭାବେ ରତ୍ନଗିରି, ଲକିତଗିରି ଓ ଉଦୟଗିରିର ବୌଦ୍ଧ କାର୍ତ୍ତିର ସଂପର୍କରେ ଅନେକ ପଡ଼ିଛି । ଛ୍ଳାତ୍ରବସ୍ତାରେ ବି ଥରେ ଆସିଥିଲି । କିନ୍ତୁ ଭାରତ ସରକାରଙ୍କ ପ୍ରତ୍ନତାତ୍ତ୍ଵିକ ସର୍ବେକ୍ଷଣ ସଂସ୍ଥା ଦ୍ୱାରା ଖନନ ହେବା ପରେ ରତ୍ନଗିରିକୁ ଆସିବା ମୋର ପ୍ରଥମ । ମନ ଆନନ୍ଦରେ ନାଚି ଉଠୁଆଁ । ରାସ୍ତାର ଦୁଇ ପାଖରେ ଦିଗନ୍ତ ବିସ୍ତାରୀ ସବୁଜ ଧାନ କ୍ଷେତ୍ର । ସତେ ସେମିତି ସବୁଜ ଶାଢ଼ୀ ପିନ୍ଧିଛି ପ୍ରକୃତି ରାଣୀ ।

ପାହାଡ଼ର ପାଦ ଦେଶରେ ଗାଡ଼ି ରଖିଲୁ । ପାହାଡ଼ ଉପରକୁ ଗୋଟିଏ ଚଲା ବାଟ ପଡ଼ିଛି । ଦଳେ ପୁଅ ଝିଅ ସେଇବାଟେ ଯାଉଥାଆନ୍ତି । ଉଠାଣି ହେଲେ ବି ସେଇବାଟେ ଆମର ପାହାଡ଼ ଚଢ଼ା ଆରମ୍ଭ ହେଲା । ଆମେ ଯାଇ ଶିଖରରେ ପହଞ୍ଚିଲୁ ।

ପ୍ରଥମେ ଦେଖିଲୁ କଟା ନିର୍ମିତ ଏକ ପ୍ରକାଣ୍ଡ ବୌଦ୍ଧ ସ୍ଥାପନ । ତାରି ପାଖରେ ଘେରି ରହିଛି ଅନେକ ଛୋଟ ଛୋଟ ସ୍ଥାପନ । ଏହାର ଅନ୍ତିଦୂରରେ ଭଗ୍ନ ମହାବିହାରର ବିସ୍ତାରୀ ପ୍ରାଙ୍ଗଣ । ପ୍ରବେଶ ଦ୍ୱାରରେ ମୁଗୁନି ପଥରରେ ତିଆରି ସୁଷ୍ଠୁ କାରୁକାର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଏକ ଦ୍ୱାରବନ୍ଧ । ପଥରର ପ୍ରଶାସ୍ତ୍ର ଚଟାଣ, ବିରାଟକାୟ ବୁଦ୍ଧ ମୂର୍ତ୍ତି ଓ ବୁଦ୍ଧ ମସୁକ, ବୌଦ୍ଧ କଳାର ବହୁ ଦେବ ଦେବୀ ମୂର୍ତ୍ତିରେ ବିହାରଟି ପରିପୂର୍ଣ୍ଣ । ବୌଦ୍ଧ ଯୁଗୀୟ କଳା ଓ ଭାସ୍କର୍ଯ୍ୟର ଏ ଅପୂର୍ବ ସମାହାର ଦେଖି ଆମେ ବିମୁଗ୍ଧ ହୋଇଗଲୁ । ତା' ପରେ ଗଲୁ ମୁୟଜିଯୁମ୍ ଦେଖିବା ପାଇଁ । ଏ ସମସ୍ତ ଦେଖିଯାରି ଅପରାହ୍ନକୁ ବାହାରିଲୁ ଉଦୟଗିରି ।

ବିରୂପା ନଦୀ କୁଳରେ ପ୍ରକୃତିର ସୁରମ୍ୟ କୋଳରେ ଉଦୟଗିରି ବୌଦ୍ଧ ପୀଠ ଅବସ୍ଥିତ । ଏକ ବିରାଟ ସୁପ ଓ ବିହାର ଖନନ ହୋଇ ଏଠାରେ ବାହାରିଛି । ଏ ସମସ୍ତ ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ପାହାଡ଼ କଟା ହୋଇ ଖୋଲା ଯାଇଥିବା ଏକ ବିରାଟ ଗଭୀର କୁପ ଏହାର ମୁଖ୍ୟ ଆକର୍ଷଣ ।

ଆଉ ଡେରି ନକରି ଶୀଘ୍ର ଲକିତଗିରି ଯିବାପାଇଁ ମିଶ୍ରବାବୁ ସୁଚେଇ ଦେଲେ । ଆମେ ଯାଇ ସେଠାରେ ପହଞ୍ଚୁ ପହଞ୍ଚୁ ଅପରାହ୍ନ ୪ଟା । ଅନେକ ଭଗ୍ନ ସୁପ ଓ କାରୁକାର୍ଯ୍ୟ ବିମ୍ବିତ ମୂର୍ତ୍ତିରେ ପରିପୂର୍ଣ୍ଣ ଲକିତଗିରି ବିହାରର କଳା ସ୍ଥାପନ୍ୟ ଅନନ୍ୟ ସାଧାରଣ । ସବୁ ଗୋଟି ଗୋଟି ବୁଲି ଦେଖିଲୁ । ପାହାଡ଼ ତଳେ ପଥର ଶିଳ୍ପୀମାନେ ମୂର୍ତ୍ତି ତିଆରି କରୁଥିବାର ଦେଖିଲୁ ।
ମୂର୍ତ୍ତି
ଗଢ଼ଣ ଅତି ସୁନ୍ଦର । ଲକିତ ଗିରିର ପଥର ଶିଳ୍ପୀମାନେ ଏବେ ବି ଏଇ ଶିଳ୍ପ କଳାକୁ ବଞ୍ଚେଇ ରଖିଛନ୍ତି । ଏହା କମ୍ ଗୋରବର କଥା ନୁହେଁ ।

अठ॑ठर एङ तिनोठि बौद्ध बिहारकु नेइ गढि उठिथिला नालया बिशु बिद्यालयर यमसामय॒क पूष्टगिरि बिशुबिद्यालय्। बाहारु बहु छात्र छात्र॑ आयि एठारे अध्ययन करुथिले। च॑न् परिक्रान्तक हृ-एन-सा॑ ताङ्क भ्रमण काहाण॑रे एङ 'पूष्टगिरि' बिशुबिद्यालय् कथा मध्य उल्लेख करिछन्ति। आजि कर्पूर उडियाइ कना खालि पढि रहिछि।

पश्चम आकाशरे सूर्य॑ असुप्राय्। आमे क्लान्तु ढोइ याइथाइ। एवे घर लेउठाणि बेल। अठ॑ठ उक्तलर शिक्षा, संस्कृति, कला ओ भास्त्र्यर असुमित यूर्य॑कु पछरे छाडि आमे चालिलू आगकु आगकु।

शब्दार्थ

ओडिशा शब्द	हिंदी अर्थ
अस्तु	अस्त
थरे	एक बार
प्रद्वि तार्कि	पुरातात्त्विक सर्वेक्षण-संस्था
संस्कृति	(पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग)
झनन	खनन, खोदन
दिग्नु बिशुर॑	दिगंत के विस्तार तक (क्षितिज पर्यंत)
घृनु	हरा
पिक्षिबा	पहनना
घल	वर्ग, समूह
प्रकाशु	बहुत बड़ा
सूप	स्तूप
मूर्गुनि पथर	काला पत्थर
सूष्म	सूक्ष्म
कारुकार्य॑ मण्डि॑	कला-मंडित
द्वार बन्ध	(दरवाजे की) चौखट
भास्त्र्यर	मूर्तिकला, शिल्प
अपूर्व यमाहार	अपूर्व समाहार

बिमूर्गध	मुध
सूरमय	सुरम्य, सुंदर
कठा हृषि	काटना
ठिआरि	निर्माण
गरुर कूप	गहरा कुआँ
म्लापत्य	स्थापत्य
अनन्य शाधारण	अनन्य साधारण/असामान्य, असाधारण
गोठिगोठि	एक एक
गढ़िशि	गठन
बश्चेइ रक्षिबा	जोवित रखना, बचाकर रखना
षमशामघीक	समसामयिक
परिक्रान्ति	परिव्राजक यात्री,
आकाशि	आसमान, आकाश
अस्तप्राय	अस्तप्राय, डूबता हुआ
क्लान्ति	थका हुआ
लेउठाणि	लौटते हुए
असुमित शूर्यप	सूर्यास्त
छक्कि	'उत्कल' (ओडिशा का और एक नाम)

अभ्यास

I. अनुच्छेद के अनुसार नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- प्रथमे घेमाने केउँ श्वानकु बूलिबाकु गले ?
- रक्तुरिर खनन कार्यप किए करिछुन्ति ।
- घेमाने केउँ बाटरे पाहाड़ उपरकु चढ़िले ?
- रक्तुरिर बिहारर द्वार बन्धि कि पथररे ठिआरि होछु ?
- केउँ नदी कूलरे उदयगिरि अब्ल्लित ?
- काहार कला म्लापत्य अनन्य शाधारण ?

7. केउँमाने एउ शिक्षा किलाकू एबेबि बर्षेइ रशिरुन्ति ?
 8. नालया बिशुविद्यालयूर समसामयिक बिशुविद्यालयू किए ?
- II.** नीचे दिए गए कथनों को उसी क्रम में क्रमबद्ध कीजिए जिस क्रम में उन का वर्णन अनुच्छेद में किया गया है।

1. मन आनन्दरे नाति उदूथाए।
2. प्रकृतिर सूरमय कोलरे उदयूरिरि गोष्ठ प10 अवस्थित।
3. पाहाड़ उपरकू गोटिए चला बाट पहिले।
4. आजि कर्पूर उड़ियाइ कना खालि पढ़ि रहिल्ले।
5. आउ डेरि नकरि शिघ्र ललितिरि यिबा पाइँ मिश्रबाबू सूचाइ देले।
6. मूर्छि गुड़िकर गड़ण बड़ि सून्दर।
7. पस्तिम आकाशरे सूर्यो असु प्राय।

III. हिंदी में अनुवाद कीजिए।

साधारणतया गण-माध्यम कहिले मूद्रण माध्यम (प्रिण्ट मिडिआ), टेलिभिजन, रेडिओ, लघुरनेट, कम्प्यूटर आदिकू बुझाए। ओडिआरे देविनिक खबरकागज सांगाकू सापुत्रिक, पाष्ठिक, मासिक, ट्रेमासिक किम्बा वार्षिक पत्र पत्रिका केबल मनोरञ्जन पाइँ नुहेँ बरं संस्कृतिरि बिभिन्न दिगं सहित साधारण लोकज्ञु परिचित करेकबा पाइँ एक बलिष्ठ माध्यम अटे। भारतरे अनेकज्ञर धारणा ये, इंद्राजी भारतर प्रमुख भाषा। एहा एत नुहेँ। भारतर ९ रु ४ प्रतिशत लोक कोशस्ति ना कोशस्ति प्रकाररे इंद्राजी सहित परिचित। भारतरे इंद्राजी प्रकाशन भारतीय प्रकाशनर मात्र १० भाग। इंद्राजी एक निर्वाचित गोष्ठीर भाषा।

आउ मध्य टेलिभिजन् एक बलिष्ठ माध्यम। आजिकालि टेलिभिजन् द्वारा येतिकि उपकार ह्रोकथाए येतिकि अपकार ह्रोकथाए। गान्धी ओ रविन्द्रनाथज्ञ समादरक कहिथिले ये, टेलिभिजन खोलिले आपणा शोकबा घरे फेरिबालाकू देखिबाकू मिलिब। एहा हेउहि अधिनिक कालर बुद्धिमत्ताकरण उपरे आक्षेप।

रेडिओर बिशुर टेलिभिजन् अपेक्षा अधिक। गाँ गद्यलिठारु आरम्भ करि सहरपर्यन्तु प्रतेकज्ञ पाखरे रेडिओ थाए। शुणिबाबालाङ्कर रेडिओ अधिक

प्रयोगन ओ प्रिय। एहा निःस्वेहरे एक बलिष्ठ माध्यम। किन्तु बर्षमान देखायाउत्ति ये, एहार आदर धारे धारे कमी आविलाशि। कारण आजिकालि जैश्वरनेपर सूग। एहा कम् यमय् उत्तरे एवं कम् उर्जरे यमयुक्त पाखरे पहुँची पारे। एहा यमग्रु विश्वकू शूष अल्प यमय् मध्यरे योढिपारुत्ति। पृथिवीरे ₹4000 रु ₹5000 पर्याप्तु भाषा अछु। एहि भाषागृहिक उन्न उन्न यंसुत्तिर परिचय बद्धन करन्ति। गोठिए भाषारे बहुउषिक पृथिवीकू धरिबा येपरि असमूक बहुउषिक भारतकू धरिबा मध्य येहिपरि असमूक। बिउन्न भाषा जिरिआरे उन्न उन्न गोष्ठी यहु यमक्क बजाय् रक्षिबा गण-माध्यम पाइँ एक आद्यान।

IV. ओडिआ में अनुवाद कीजिए।

महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अनिषेध नेता थे। वे अहिंसा के पुजारी थे लेकिन वे अहिंसा को दुर्बल व्यक्ति के लिए प्रतिरोध न करने का बहाना नहीं मानते थे। स्वतंत्रता के दीवानों का एक दल ऐसा भी था जो अहिंसा का विरोधी था। उन का विश्वास था कि हँसते-हँसते फौसी पर चढ़ेंगे लेकिन विदेशियों को मारेंगे। इस से वे डरेंगे और अपने देश से निकलेंगे। विदेशियों को बल से ही भारत से निकाल सकेंगे। देशभक्ति सारे भारत में फैल रही थी। नेता गण जेल जाकर अपना फर्ज़ पूरा कर रहे थे। बच्चे गली-गली घूम कर गाने गाते थे। इस आंदोलन से कोई नहीं बचा। १५ अगस्त १९४७ को हमें आज़ादी मिली। जब सारी दुनिया सो रही थी, भारत नये युग में प्रवेश कर रहा था। शहीदों के सपने पूरे होगए। जयहिंद।

V. मोबैल फोन् की उपयोगिता के बारे में एक अनुच्छेद ओडिआ में लिखिए।

टिप्पणी

कर्पूर उषियाइ कना खालि पछि रहिछु :-

यह ओडिआ का एक प्रसिद्ध मुहावरा है। इसका अर्थ, 'आभा चली गई केवल प्रतीक शोष है।'